सत्य सपथ करुणानिधान की

रामशंकर गौड

गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' भारतीय संस्कृति का एक ऐसा अनूठा ग्रन्थ है जिसके गागर में सागर भरा गया है। यह वह ग्रन्थ है जिस पर अनेकों शोध ग्रन्थ लिखे गये हैं अनेक साहित्य मनीषियों एवं सन्तों ने इसके अमूल्य रत्नों को खोजकर जन मानस के सन्मुख उजागर किये हैं।

ऐसा ही एक प्रसंग सुन्दरकाण्ड में भी उपस्थित हुआ है। अंजनी सुत श्री हनुमान जी सीता जी की खोज के लिए भेजे गये हैं वे लंका में गुप्त रूप से रखी गई सीता जी के स्थल अशोक वाटिका में पहुँच गये हैं। रावण द्वारा सीता की प्रतारणा दुःखपूर्वक मौन होकर सुनते हैं, **'तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई'** क्योंकि उन्हें राम का सन्देश सीता जी को देना था। सीता जी द्वारा त्रिजटा से आत्मदाह (रावण के भय से नहीं राम के विरह के कारण) की इच्छा को त्रिजटा कैसे पूर्ति करती? अत्यन्त विरहाकुल सीता की दशा कपीश से नहीं देखी गई। उचित समय देखकर उन्होंने सीता जी की ओर मुद्रिका डाल दी। **कपि करि हृदयं विचार दीन्हिं मुद्रिका डज़रि तब (सुन्दर. 12)**

राम नाम अंकित उस मुदरी को सीता जी कैसे नहीं पहचानती। राम की ओर से उन्हें दी गई यह अंगूठी विवाह की सौगात थी। वनवास के समय राम ने तो सभी आभूषण त्याग दिये थे। किन्तु गुरु वसिष्ठ ने सीता को ऐसा करने से मना कर दिया था। फलतः वे सुहाग के आभूषणों सहित वनवास में आई थी। केवट को नदी पार की उतराई देने के समय राम के संकोच को देख उन्होंने यही मुद्रिका केवट को देने को दी थी जो केवट ने स्वीकार नहीं की थी। सम्भवतः यह तभी से राम के पास थी अथवा रावण द्वारा हरण होने पर सुग्रीवादि वानरों को देखकर आकाश मार्ग से आभूषणों की पोटली में डाल दी थी।

लंका में उस अंगूठी को देखकर उनका हृदयय हर्षित भ हुआ और विषादित भी। अंगूठी को पहचानकर राम नाम पढ़ कर हर्षित होना स्वाभाविक था। विषाद इसलिए कि क्या किसी ने अजय राम को जीतकर अंगूठी प्राप्त कर ली है। या कहीं राक्षसों ने माया से तो नहीं बना ली। किन्तु इन दोनों बातों के प्रति उनके हृदय ने ही प्रत्युत्तर दे दिया था। जीत को सकल अजय रघुराही माया तो असि रचि नहीं जाई। (सुन्दर 1/13)

सीता को इस किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति से उबारने के लिये मधुर स्वर में हनुमान जी श्री राम के गुणानुवाद करने लगे। जब सीता ने मनोयोग से उसे सुनना शुरू किया तो हनुमान जी ने राम जन्म से

सीता हरण तक की घटनाएँ ब्यारेवार सुनाई। सीता जी के आग्रह पर हनुमान प्रकट तो हुए किन्तु उन्हें देखकर विस्मय से वे मुँह मोड कर बैठ गई। इस विस्मय के कारण थे एक साधारण सा वानर एवं वह भी लंका में। वह भी अपने को राम का दूत कह रहा है। पर उस पर विश्वास कैसे करे, क्या पता कोई रावन का दूत हो? इस बहाने फुसलाने आया हो। या और अन्यान्द कारणों से विश्वास नहीं कर पा रही थी सीता। तब उदधिक्रमण (हनुमान का एक नाम) ने कहा– ''राम दूत मैं मातु जानकी सत्य सपथ करुणा निधान की।'' (वही 5/13)

अब सीता को विश्वास हो गया, ऐसा क्या था और कौनसा शब्द 'सत्य सपथ' , फिर 'करुणा निधा' हाँ यही वह शब्द था जिसने जानकी को लगा कि यह कृपासिन्धु राम का दास है। हम लोग अपने दाम्पत्य जीवन में पति पत्नी को और पत्नी पति को कोई सम्बोधन से सम्बन्धित करती हैं। प्रायः पतियों के नाम पत्नियाँ नहीं लेती, इसे लज्जा कहें या पति की उम्र कम हो जाने का विश्वास, इसलिये कोई नामांकन होना हो जाता है। बच्चे हो जाने के बाद अमुक के पिताजी का सम्बोधन तो आम है ही पर उससे पूर्व प्रिय, पियतम, डार्लिंग साहब आदि नाम से इंगित करना होता है। 'मानस' में मैथिली ने प्रायः प्राणपति, प्राणनाथ, प्रभु विशेषतः नाम सम्बोधन से रघुवर को सम्बोधित किया है परन्तु ऐसा ही एक निजत्व सम्बोधन सीताजी ने रामचन्द्र जी के लिए चुना हुआ था और वह था 'करुणा-निधान' सत्य सपथ करूणा निधा मानो प्रतीति कर गया हो। जब राम ने अंगूठी दी तो हनुमान को अलग ले जाकर यह भी कहा था, तुम्हें देखकर या तुम्हारी बातों से सीता पर प्रभाव नहीं पडेगा। उनमें विश्वास जगाने के लिए हम दौनों के गुप्त नाम को प्रकट करना ही पडेगा और यह नाम था करुणाप निधा। अब देखें कि सीता ने यह नाम कहाँ से पाया? मिथलेश कुमारी जानकी ने पुष्प वाटिका में राजकुंवर राम को देखा सीता को लगा ये ही मेरे पति होने के सर्वथा योग्य हैं। इसलिये उन्होंने तत्काल अपनी कुलदेवी पार्वती से प्रार्थना की देखिये बालकाण्ड में–

जय जय गिरिवर राज किशोरी, जय महेश मुख चंद चकोरी। (बाल. 3/235)

आज भी विवाह हेतु योग्य वर के लिए कन्याएँ पार्वती माता को ही मनाती है। सीता भी शिव विवाह को स्मृत करती है। गौरी मनाती है, गणेश और षडानन की माता जगत जननी से राम को पति रूप में पाने की प्रार्थना करती है। 'मोर मनुरथु जानहू नीकें'' कहकर वे उनके पैर पकड लेती हैं। इसी से भवानी द्रवित होती है जैसे कहती है– 'सुन सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी।। (वही 4/236)'। तुम्हें मन चाहा वर प्राप्त होगा।

मनवांछित वर का वरदान– मनु जाहिं राचउ मिलिहिं सो बरु सहज सुन्दर साँवरो, करूणा निधान सुजान सीलु सनेह जानत रावरो।। वह भी तेरे मन में जो प्रेम है वह जानता है शीलवान सुजान वह

करुणा निधान है। भवानी माता के द्वारा दिये गये उस सम्बोधन को सीता ने तभी से ग्रहण कर लिया था। तभी वहाँ उस एकान्तिक विरह पीडादग्ध सीता को एक अजनबी का 'करूणा निधा' सम्बोधन विश्वास पैदा कर गया।

इस संकल्प का द्वन्द रूप में पुरावृति की हुई है। रावण दर्पहा (हनुमानजी का नाम) राम को लंका से लौटकर सीता जी की ओर से दिया चिह्न 'चूडामणि' दे रहे हैं और वहीं विरहदवध रमणी का सन्देश भी– अश्रुसिंचत दोनों नेत्रों से सीता की मार्मिक पुकार किसी भी काव्य साहित्य का अनुपम उदाहरण है–

अवगुन एक मोर मैं माना। विद्युरत प्रान न कीन्ह पयाना।
नाथ सो नयनाहि को अपाधा। निसरत प्रान करहिं हठि बाधा।।
विरह अगिनि तनु तूल समीरा। स्वाय जारह छन महिं सरीरा।।
नयन स्रवहिं जलु निज हित लागी। जरैं न पाव देह बिहरागी। (सुन्दर 3-4/3-11)

फिर सीतान्वेषक हनुमान राम में वही भाव जगाने के लिये वैसे ही शब्दों का प्रयोग करते हैं करूणा निधान तो नहीं कहते मगर कहते हैं–

निमिष निमिष करूणा निधि जाहिं कल्प सम बीति।
बेगी चलिअ प्रभु आनिऊ भुज बल खल दल जीति।। (सुन्दरकाण्ड 31)